ट्रांसजेंडर जीवन का कसैला यथार्थ - श्रापित किन्नर

डॉ. मेरली के पन्नूस
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
सेंट स्टीफेंस, कॉलेज उषवूर

शोध सार -: समकालीन दौर में स्त्री,दलित,आदिवासी के समान ट्रांसजेंडर भी समाज में अपनी पहचान के लिए संघर्षरत हैI इंसान होने पर भी समाज द्वारा उन्हें अधूरेपन का एहसास हर पल कराया जाता है Iइस अहसास के तले उनकी जिंदगी नरक बन जाती है I समाज के हाशिये में जीने को अभिशप्त ट्रांसजेंडर को अपने स्व की पहचान हो चुकी है Iवे समाज की मुख्यधारा से जुड़ने लगे हैं और मानवीय गरिमा को हासिल कर अपने दायित्व को बखूबी निभा रहें हैं I इनमें शबनम मौसी,नर्तकी नटराज,लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, मानोबी बंद्योपाध्याय,कलिक सुब्रमण्यम,पद्मिनी प्रकाश,पृथिका याशिनी,रोज वेंकटेसन,अक्काई पद्मशाली,मधु बाई,सोनिया मौसी,मोनिका दास,सत्या श्री शर्मिला,जोयिता मंडल,शाबी,जिया दास,सिमरन,ग़जल,रिया दास,विद्या आदि शामिल है Iसाहित्यिक गतिविधियों और उच्च न्यायालय के 2014,15 अप्रैल के फैसले से इनकी स्थिति बेहतर हुई है Iसमाज ने इस ओर सोचना शुरू किया है Iसाहित्यिक रचनाओं के द्वारा इस सच्चाई को शब्दबद्ध किया जा रहा है कि ट्रांसजेंडर भी इन्सान है,उनसे इंसानों की तरह सलूक किया जाए और इसी में समाज की भलाई है I इस दिशा में डॉ.मुक्ति शर्मा का उपन्यास 'श्रापित किन्नर' का अपना महत्व है I

बीजशब्द :अब्बू,अम्मी,किन्नर,श्रापित,मुसीबत,स्कूल,कॉलेज,शोषण,द फ्तर,गुरु,गुरु माँ,मामा,आँसू,मंसूबे,हौसले।

विषय-वस्तु -: डॉ.मुक्ति शर्मा का उपन्यास श्रापित किन्नर के केंद्र में है नरगिस नामक ट्रांसजेंडर Iनरगिस के साथ -साथ उपन्यासकार ने हिना और जावेद ट्रांसजेंडर के जीवन के कसैले यथार्थ को पर्त-दर-पर्त उघाड़ने का कार्य किया है Iनरगिस के माता -पिता जासमीन और फारुक अहमद उसके ट्रांसजेंडर होने पर भी उसे बहुत चाहते हैं Iनरगिस के अलावा उनके दो और बच्चे हैं – फैसल और रुकेइया I लेकिन घर के बाहर समाज के ताने उसे सुनने पड़ते हैं Iस्कूल में उसके दोस्त उससे नफरत करते हैं Iजेबा अपनी माँ से घर आकर कहती है कि वह नरगिस के साथ बैठना पसंद नहीं करती और क्लास में नरगिस अजीब हरकतें करती है Iनरगिस का बाल मन दुखी है कि कोई उसके पास बैठने के लिए तैयार नहीं है- "वह जैसे ही जेबा के पास बैठने लगी तो उसने उसे धक्का देकर पीछे धकेल दिया कोई भी उसे अपने पास बैठाने के लिए तैयार नहीं था "[1] नरगिस घर में जाकर कहती है कि उसका दाखिला किसी दूसरे स्कूल में कर दिया जाय Iनरगिस का स्कूल बदलकर उसे घर के पास सरकारी स्कूल में दाखिला दिलवाया गया I वहाँ भी नरगिस को वही सब सहना पड़ा जो उसे पहलेवाले स्कूल में सहना पड़ा था Iस्कूल की एक लड़की ने कहा कि वह न लड़की है और न लड़का Iयह सुनने पर नरगिस को दुःख होता है और वह पत्थर उठाकर उसके सिर पर दे मारती है Iलड़की के घरवाले पुलिस में रिपोर्ट करवा देते हैं Iनरगिस के घर पुलिसवाले आते हैं Iनरगिस के पिता उन्हें समझा -बुझाकर केस को रफा -दफा कर देते हैं Iनरगिस के ट्रांसजेंडर होने की खबर चारों ओर फैल जाती है Iउसके घर ट्रांसजेंडर पहुँच जाते हैं और नरगिस को अपने साथ घसीटकर ले जाते हैं I विस्थापन ट्रांसजेंडर जीवन का यथार्थ है I इसप्रकार नरगिस के लिए अपने वालों का साथ छूट जाता है I वह घर के लिए पराई हो जाती है Iगुरु का आश्रम दस साल की बच्ची नरगिस के लिए सहारा बनता है Iउसकी पढने में रुचि समझकर उसे गुरु द्वारा तालीम दी जाती है Iनरगिस के मंसूबे बुलंद थे,उसे समाज का मुकाबला करना था –" वह इस लड़ाई में अकेले खड़ी थी अपनी पहचान बनाने की लड़ाई समाज में सिर उठाकर जीने की लड़ाई I" [2] वह बारहवीं में अच्छे अंकों से पास होती है Iआगे पढाई के लिए कॉलेज जाने पर भी लड़के -लड़कियों के ताने उसे सहने पड़ते हैं Iलेकिन वह हिम्मत नहीं हारती है Iकॉलेज में अकरम से उसे प्यार हो जाता है और अकरम को भी Iनरगिस के जीवन की सच्चाई का पता लगने पर कि वह एक ट्रांसजेंडर है अकरम का दिल बैठ जाता है Iनरगिस आत्महत्या की कोशिश करती है लेकिन बच जाती है Iअकरम उससे अस्पताल में मिलने आता है Iअकरम को समाज की परवाह नहीं है,वह नरगिस को नहीं ठुकराता, जीवन साथी के रूप में उसे ही अपनाना चाहता है – अकरम ने कहा मुझे दुनिया की परवाह नहीं है,मुझे अपने रिश्ते को बचाना है मैं अगर शादी करूँगा तो सिर्फ तुमसे ....."[3] उपन्यासकार ने अकरम को इंसानियत के पैरोकार के रूप में प्रस्तुत किया है,जो नरगिस जैसे ट्रांसजेंडर को अपनाने के लिए तैयार है Iहर हालत में उसका साथ देने को तैयार है Iसमाज के थपेड़ों से और लहूलुहान होने से वह नरगिस को बचाता है I

उपन्यास में नरगिस के अलावा हिना ट्रांसजेंडर के जीवन के खुरदरे यथार्थ को भी लेखिका ने उघाड़ने का कार्य किया है Iहिना का जन्म अकरम के मामा की बेटी के रूप में होता है Iहिना के जन्म के साथ ही अकरम के मामा का घर टूटकर बिखर जाता हैI हिना के जन्म की खबर सुनने पर अकरम की नानी को दिल का दौरा पड़ जाता है और कुछ ही दिनों के भीतर उनकी मौत हो जाती है Iअपनी माँ की मृत्यु होने पर हिना के पिता उसकी परछाई तक से नफरत करने लगते हैं Iहिना की माँ ही अब उसके जीने का एकमात्र सहारा रह जाती है I हिना को अपने घर में ही दर -दर की ठोकरें खानी पड़ती है Iहिना के पिता उससे हमेशा एक दूरी बनाये रखते हैं I हिना के पिता उसे अपने परिवार के लिए श्राप मानते हैं I हिना के तीन साल के होने पर भी उसके प्रति उसके पिता की नफरत वैसे ही बरकरार रहती है Iहिना की माँ उसके पिता को समझाती है लेकिन कोई फायदा नहीं होता Iइसी बीच हिना की माँ की तबीयत खराब हो जाती है Iइलाज करने पर पता लगता है कि हिना की माँ को कैंसर है अंतिम चरण का I तब भी हिना के पिता यही कहते हैं कि वह उनके परिवार के लिए श्रापित है Iचंद ही दिनों में हिना की माँ चल बसती है इसप्रकार हिना का एकमात्र सहारा उसकी माँ से भी उसे हाथ धोना पड़ता हैI

सामाजिक मानसिकता इस कदर बदतर है कि ट्रांसजेंडर पढ़ – लिखकर समाज में अपनी पहचान हासिल करना चाहें तो भी उनके रास्ते पर कांटें बिछा दिए जाते हैं,उनका अपमान किया जाता है Iनरगिस को नौकरी मिलने पर पहले दिन उसके आफिस के शर्मा उसका मज़ाक उड़ाते हुए आफिस के पाठक जी से कहते हैं कि – "पता है यह किन्नर है इसको किन्नरों के साथ देखा था जब हमारे मुहल्ले में लड़का पैदा हुआ था ! ओहो अब किन्नर आफिस में भी काम करेंगे चलो अच्छा है इसी बहाने हम भी मौज मस्ती करेंगे !" [4] मैनजेर द्वारा उसके साथ बदसलूक किये जाने पर वह उन्हें मुहतोड़ जवाब देती है कि उसे नौकरी नहीं चाहिए वह उन किन्नरों की तरह नहीं है जो पैसे के लिए लोगों को

उसकी अपनी पहचान है Iवह अकरम की पत्नी है I वह पढ़ी – लिखी किन्नर है अनपढ़ नहीं जो समाज की पैरों की जूती बन कर रह जाये I वह ऐसा कहकर नौकरी छोडकर चली जाती है Iइसप्रकार इन्हें दुत्कारा जाता है Iइनकी पहचान को तहस - नहस किया जाता है Iवे समाज में मात्र उपहास के पात्र बना दिए जाते हैंI लेकिन नरगिस चिन्दियों में टूटकर नहीं बिखरती बल्कि उसके मंसूबे बुलंद है और वह अपनी ज़िंदगी की राह में आगे बढती है I वह राजनीति में जाना चाहती है और राजनीति में फैले शोषण और भ्रष्टाचार का सफाया करना चाहती है Iअकरम नरगिस का हाथ मांगने उसके घर पहुँचता है और सारी सच्चाई बयान करता है I अपने घरवालों की परवाह किये बिना अकरम नरगिस को अपनी जीवनसंगिनी बनाने में कामियाब होता हैI दोनों की शादी हो जाती है I अकरम का प्यार नरगिस को जीने की प्रेरणा देता है I वे दोनों समाज के बनाये लीक से हटकर सोचते और अपने जीवन का बसर करते हैं Iअकरम उसके लिए सहारा बनता है Iअब नरगिस के घरवाले भी उसका साथ देते हैं Iअकरम के घर में नरगिस को सास के ताने सुनने पड़ते हैं,लेकिन अकरम का साथ नरगिस को सब कुछ झेलने की हिम्मत देता है Iअकरम की मामी के मरने पर मामा ने दूसरी शादी कर ली Iहिना के साथ सौतेली माँ का व्यवहार बहुत बुरा था I अकरम के मामा अपनी दुनिया में मस्त थे,उन्हें हिना की कोई परवाह नहीं थी Iघर के हालात के कारण हिना को स्कूल छोड़ना पडा I हिना के पिता हमेशा उसे ताने देते हैं कि –" श्रापित मेरे घर को निगल गई ! चली जा यहाँ से ,कहाँ जाऊँ ? मुझे नहीं पता !चादर के अंदर मुँह छिपाकर रोने लगी उसे माँ की बहुत याद आ रही थी Iमाँ उसकी आँखों में आँसू नहीं आने देती थी I" [5] हिना की मुसीबतें देखकर अकरम उसे गोद ले लेता है और अपने घर ले आता है Iअकरम की माँ उसपर टूट पड़ती है,लेकिन अकरम इसकी परवाह नहीं करता I इसी बीच नरगिस एच. आई.वी. की शिकार हो जाती है और शहर के अस्पताल में उसका उपचार चलता है Iअकरम के घर पर न रहने पर हिना को आश्रमवाले उठा ले जाते हैं Iहिना आश्रम में जहर खाकर मरने की कोशिश करती है,लेकिन बच जाती है I हिना की भर्ती स्कूल में की जाती है Iवहाँ सब उससे दूरी बनायें रखते हैं Iनरगिस का सहारा उसके लिए प्रेरणा बनता है Iवह डॉक्टर की पढ़ाई के लिए लन्दन चली जाती है और डॉक्टर बनकर लौटती है Iवह अपना सम्पूर्ण जीवन लोक सेवा के लिए लगा देती है Iजनता उसे स्वीकाराते हैं , उसका आदर करते हैं Iवह समाज की जड़ताओं को तोड़ती है Iवह गरीबों के लिए मददगार बनती है I उसके द्वारा एक संस्था चलायी जाती है जिसके द्वारा किन्नरों से जुडी हर समस्या का हल निकाला जाता है Iउसे आज बहुत लोगों का साथ मिला है I वह अपनी लड़ाई खुद लड़ रही है Iउसने अपने कार्यों के द्वारा यह साबित कर दिया है कि वह समाज के लिए श्रापित नहीं बल्कि वरदान है,जो उसे अपनाने से कतराते हैं वे कितने मुर्ख हैं Iहिना ने अपना रास्ता खुद तय किया है Iआज उसे अपना जीवन सार्थक लगता है I

उपन्यास में लेखिका ने जावेद नामक ट्रांसजेंडर के जीवन की सचाईयों को भी उद्घाटित करने का कार्य किया है Iजास्मिन, नरगिस की माँ को याद है कि उसकी कश्मीर वाली सहेली के घर ट्रांसजेंडर पैदा हुआ था Iवे लोग गरीब थे और मजदूरी करके अपना गुजारा करते थे Iस्कूल में बच्चे उसका मजाक उड़ाते हैं Iउसके रहते दूसरे बच्चे स्कूल आने से कतराने लगे I इसप्रकार जावेद की पढाई छूट गयी Iआगे स्कूल के प्रधानाचार्या मैम की बहन के घर नौकरी करने लगता है और पिता की मृत्यु के बाद अपने घर की देख -भाल करता है I

निष्कर्ष -: उपन्यास में लेखिका ने नरगिस,हिना,जावेद जैसे ट्रांसजेंडर की पीड़ा को पर्त-दर-पर्त उघाड़ने का कार्य किया है Iसमाज द्वारा उन्हें नेस्तानाबूज करने पर भी वे अपनी पहचान को बनाने में कामयाब होते हैं Iट्रांसजेंडर के प्रति समाज की मानसिकता में बदलाव आया है Iअकरम जैसे लोग अपने जीवन- साथी के रूप में नरगिस जैसे ट्रांसजेंडर को अपनाने लगे हैं I यह वास्तव में ट्रांसजेंडरों के प्रति समाज के सकारात्मक रवैया का ही परिणाम है I शिक्षा हासिल कर ट्रांसजेंडर भी समाज की मुख्यधारा से जुड़ने लगे हैं I नरगिस और हिना जैसे पात्र ज़िल्लत भरी ज़िंदगी जीने को तैयार नहीं होते,समाज के बनाये लीक से हटकर अपना जीवन बसर करते हैं I संघर्ष करते हुए समाज में अपने लिए जगह बनाते हैं Iसंघर्ष उनके जीवन की दास्तान है I वे टूटकर चिन्दियों में बिखरने की बजाय बुलंद मनसूबे के साथ अपने जीवन की राह में आगे बढ़ने लगे हैं Iअब तो परिवारवाले भी उन्हें अपनाने लगें हैं Iइस सोच से उनकी स्थिति में बदलाव आया है Iइस बदलाव ने उनके हौसले को और बुलंद किया है जिससे वे समाज में अपनी पहचान अख्तियार करने में सफल हुए हैं I आगामी दिनों में भी ऐसे सकारात्मक बदलाव उनके लिए सुनहरे भविष्य का निर्माण करने में अहम भूमिका निभा पायेंगे I

****

संदर्भ सूची -:

1. डॉ.मुक्ति शर्मा - श्रापित किन्नर-पृ:9
2. डॉ.मुक्ति शर्मा - श्रापित किन्नर-पृ:17 – 18
3. डॉ.मुक्ति शर्मा - श्रापित किन्नर-पृ:23
4. डॉ.मुक्ति शर्मा - श्रापित किन्नर-पृ:42
5. डॉ.मुक्ति शर्मा - श्रापित किन्नर-पृ:48